CCRH Quarterly Bulletin
Vol. 14 (3&4) 1992

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् की गतिविधियाँ

चिकित्सा सत्यापन अनुसंधान पर एक रिपोर्ट[१]

होम्योपैथी में औषध की रोग जनन क्षमता का चिकित्सात्मक सत्यापन बार-बार करते रहना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि स्वस्थ मनुष्यों पर औषध को मूल रूप में प्रमाणित करना। इसका महत्व चिकित्सा में उत्तरोत्तर बढता जाता है। यह उन औष।धियों के लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जो औषत शास(में नई शामिल की गयी या जिन औषधियों का प्रमाणन विस्तार से नहीं हुआ है और इसी कारण उनकी रोगसाध्यम क्षमता की विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

चिकित्सा सत्यापन से न केवल औषध की रोग साध्यता की पुष्टि करने में सहायता मिलती है परन्तु कुछ अतिरिक्त लक्ष्णों एवं चिन्हों की जानकारी मिलती है औषध की रोग साध्यता में वृ द्व करते हैं।

चिकित्सा सत्यापन अनुसंधान की महत्ता को देखते हुए, परिषद् ने अपने आरंभ काल से ही एक दीर्घ योजना के रूप में इसे चलाया और गाजियाबाद (उ॰प्र॰) १९७९, वृंदावन (उ॰प्र॰) १९८४ एवं पटना (बिहार) १९८५ में तीन इकाईयों की स्थापना की जो केवल चिकित्सा सत्यापन अनुसंधान का कार्य ही करती हैं। इन इकाईयों के अतिरिक्त यह कार्य क्षेत्रीय होम्यो॰ अनुसंधान संस्थान, नयी दिल्ली, होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर को भी सौंपा गया है।

परिषद् ने ६२ औषधियों का चिकित्सा सत्यापन कार्य प्रारंभ किया है जिसके अंतर्गत १६ औषधियों का प्रमाणन परिषद् ने स्वयं किया है।

सत्यापित हुए लक्षणों का विवरण प्रत्येक औषधि के अन्तर्गत निम्न प्रकार से दिया गया है। इन लक्षणों की जिस होम्योपैथिक साहित्य से पुष्टि की गयी है उनका अंक निम्नलिखित सूची के अनुसार प्रत्येक लक्षण के साथ कालम ७ में दिया गया है। अतिरिक्त लक्षण जो इन औषधियों के द्वारा सत्यापित हुए हैं, उनका विवरण अलग से औषधि के अनुसार दिया गया है। इन लक्षणों का पूर्ण-रूपी सत्यापन होने पर औषधियों के रोग साध्यक सक्षमता में शामिल किया जा सकता है।

होम्योपैथिक साहित्य एवं लेख

१. क्लार्कमैटिरिया मैडिका
२. हैरिंग गाईडिंग सिम्पटम्स
३. एलैन्स एन्साईक्लोपोडिया
४. बौरिक मैटिरिया मैडिका
५. डा॰ जुगल किशोर द्वारा प्रमाणन
६. डा॰ डी॰एम॰रे॰ द्वारा प्रमाणन
७. ड्रग्स आफ हिन्दुस्तान, डा॰ एस॰सी॰घोष
८. केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रमाणित साहित्य

---

[१]केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् के वार्षिक प्रतिवेदन १९९१-९२ से उद्धृत

प्रत्येक औषधि के सत्यापित लक्षणों का विवरण

औषधि का नाम : अब्रोमा आगस्टा **पोटैन्सी—मदर टिंकचर, ६, ३०, २००**

अंग	लक्षण	लक्षण की अवधि	रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या	चिकित्सा की अवधि	साहित्य साधन क्रमांक
मन	चिडचिडापन	१५ दि॰-३ मा॰	३	३	१२-२२ दि॰	७
	उदासीनता	१ माह	१	१	१० दि॰	८
सिर	चक्कर आना	३ दिन- ७ वर्ष	३०६	१७४	४-१० दिन	४
	सिर दर्द-सुधार खुली वायु में एवं दबाव से	३-२० दिन	२५४	१३९	३-१२ दिन	८
	सिर के शीर्ष भाग में दर्द होना (फटने जैसा)	३-८ माह	८७	४९	२-३ स॰	८
नेत्र	आंखों में जलन उग्रता-रात्रि में, सुधार- दिन में	२-५ दि॰	२	२	२-४ दि॰	८
कान	कानों में दर्द	२-१५ दि॰	१८	५	४-७ दि॰	८
	श्रवण शक्ति कमजोर (ऊंचा सुनना)	१० दि॰- १ माह॰	३१	५	६-११ दि॰	८
नासिका	जुकाम के साथ पतला प्रचूर मात्रा में नासास्राव	३ दि॰- २ व॰	९५	५७	३-७ दि॰	७,८
गला	गले में दाहता	२-३ मा॰	८	६	२-३ मा॰	८
मुख	मुख में शुष्कता तथा	२ दिन- ३ वर्ष	६१	३१	१-८ दि॰	८
	अत्याधिक प्यास	३ दि॰- ३ मा॰	१८९	९६	७-२० दि॰	८,९
आमाशय एवं उदर	उदरवायु उग्राता भोजनोपरान्त	५ दि॰ - २ व॰	३५७	२०५	३-१४ दि॰	४,९
	पेट में नाभि।क्षेत्र में दर्द उग्रता-दोपहर में	३-२० दि॰	२३९	१३८	३-१२ दि॰	८
	मीठा एवं गर्म पदार्थों के सेवन की इच्छा	३-६ मा॰	७	७	१०-१८दि॰	८
	भूख समाप्त होना	७-२० दि॰	९२	३३	७-१० दि॰	८
	कब्ज	७ दि॰ - २ व॰	३७४	२०२	२-४० दि॰	४
	मल शुष्क सख्त	४ दि॰-२ व॰	४९	२१	१-२१ दि॰	७
	झाग युक्त		१७	७		
मूत्राशय	मूत्र त्याग प्रचुर मात्रा में एवं बार-बार होना	७ दि॰ ८ व॰	२४८	१३४	६-३ मा॰	४८
	मूत्र त्याग में जलन होना	७-१० दि॰	६२	४६	३ दि॰	५
स्त्री जननांग	श्वेत प्रदर गाढा, सफेद स्राव होना	७ दि॰- १ व॰	१८७	१०३	९-२० दि॰	८
	श्वेत प्रदर पतला, सफेद स्राव	२ माह-३ व॰	२९	२०	४ दि॰-४ स॰	४
	मासिक स्राव, अनियमित दर्द युक्त एवं अल्पमात्रा में	१-६ मा॰	१७६	८४	१-२ व॰	८
	मासिक स्राव-अवरुद्धता	३ दि॰-१ व॰	१२	३	२-८ दि॰	७

श्वसन तंत्र	खांसी के साथ-गाढ़ा सफेद बलगम, उग्रता सायंकाल एवं कमर दर्द	४ दि०-१ व०	८२	३८	५-१५ दि०	८
	शुष्क खांसी, उग्रता रात्रि में	३-१५ दि०	३१८	२०५	३-१० दि०	८
पीठ	कमर दर्द, उग्रता हिलने डुलने से, सुधार विश्राम से	४-२० दि०	३६१	१९२	२-१२ दि०	५
छाती	धड़कन महसूस होना, सुधार - लेटने से, उग्रता-हिलने डुलने से	७-२० दि०	६७	४७	४-११ दि०	४८
	छाती में बांयी ओर दर्द होना	३-१० दि०	७१	१८	४-७ दि०	८
	छाती में बायी ओर दर्द, उग्रता-सायं काल	२-६ दि०	२८	२२	३-६ दि०	८
निद्रा	अनिद्रा	१०-३० दि०	११५	५७	३-१४ दि०	८
टांगें एवं भुजाएं	जोड़ों में दर्द, उग्रता हिलने डुलने पर, सुधार विश्राम से	४ दि०-१ व०	२८६	१५८	२-१० दि०	८
	टांगों में दर्द-उग्रता चलने पर	२ दि०-१ व०	१७७	१०५	४-२० दि०	१
	ज्वर ठंड के साथ तथा बदन में दर्द होना	२-७ दि०	१३०	५१	१-५ दि०	८

औषधि का नाम : एकालिफा इंडिका — **पोटैन्सी-६, ३०**

सिर	माथे में हल्का-२ दर्द होना	२-१८ दि०	३१	१२	२-४ दि०	७
नासिका	जुकाम के साथ नासास्राव, उग्रता प्रातः काल	२-१० दि०	२५	१६	३-८ दि०	७
	नासारक्त स्राव - सुर्ख लाल (ग्रीष्म ऋतु में उग्रता) उग्रता प्रातःकाल	२ दि०-३ मा०	६१	३७	१-१० दि०	७,९
उदर एवं गुदा	पेट में दर्द	३-६ दि०	३०	२१	२-६ दि०	७
	मल पतला, जलीय के साथ, उदरवायु का शोर के साथ निष्कासन	१ दि०-५ मा०	११९	६७	२-१५ दि०	४,७
श्वसन तंत्र	शुष्क खांसी, उग्रता प्रातः काल	२-१५ दि०	४०	२३	४-१० दि०	४,७,९
	सायंकाल तथा रात्रि में	२ स०-४ मा०	१३	४	२-४स०	
	खांसी के साथ बलगम आना, रक्त के साथ, उग्रता-प्रातःकाल	२ दि०-६ वर्ष	२०	१३	२-१३ दि०	७
	बलगम गाढ़ा सफेद रक्त के साथ	२ स०-४ मा०	१४	७	२-४ स०	६८
छाती	खांसने से सीने में दर्द होना	२-८ मा०	९	८		७
ज्वर	ज्वर-ठंड के साथ उग्रता-प्रातःकाल	१-४ दि०	२४	१५	२-७ दि०	७

औषधि का नाम : एकैरिन्थस एस्पैरा — **पोटैन्सी : ६, ३०**

नासिका	जुकाम (पतला नासास्राव, उग्रता प्रातःकाल सायंकाल एवं रात्रि में)	२ दि०-३ मा०	३२९	२०९	३-८ दि०	९
गुदा	मल पतला -जलीय आवंयुक्त	१ दि०-३ मा०	३३४	२०८	२ दि०-४ स०	४,७
ज्वर	ज्वर के साथ सिरदर्द, बदन दर्द एवं	१ दि०-७ दि०	१८०	११६	२-६ दि०	९

	कंपकंपी उग्रता रात्रि में	२-९ दि०	१२	९	२-११ दि०	
	एवं प्रातःकाल	३-६ दि०	६	५	३-७ दि०	
त्वचा	फोड़े-फुंसी	२-३० दि०	२४८	१४०	३-१० दि०	४,९
	लाल एवं दर्द युक्त	२-३ मा०	७९	५८	१-२ स०	
	वेसीकूलर उद्‌भेद के, मवाद होने की प्रवृत्ति	४-६ स०	१०	७	१-२ स०	७,९
	हाथ एवं पैरों में अल्सर बनना	२ मा०-८ व०	२४	१६	४-६ स०	७
	मवाद बनना	१ दि०-३ व०	८३	३८	२-२० दि०	७,९

औषधि का नाम : ईगल फोलिया पोटैन्सी : ३ , ६, ३०, २००

सिर	माथे में दर्द, सुधार खुली वायु में ,	३-१० दि०	२००	११७	२-३० दि०	८
	(उग्रता ४-८ बजे सायं)	२ दि०-१ मा०	२	१	१ मा०	७
नासिका	जुकाम-सौम्य, सफेद नासा-स्राव के साथ सिर में भारीपन	१ दि०- १ वर्ष	१२	७	२-१६ दि०	८
उदर एवं आमाशय	उदरवायु (के साथ पेट में भारीपन) सुधार निश्कासन से	५ दि०-३ मा०	३२४	२६३	३-१२ दि	९
	अपचन	७ दि०-१ मा०	३०१	१३५	३-१- दि०	९
	नाभि के आसपास मरोड़ जैसा	३-२० दि०	२५६	१४७	४-१० दि०	८
	दर्द होना उग्रता-खाने के बाद	२मा०-३ व०	९४	६२	२-४ स०	
	मल पतला आवं एवं रक्त मिश्रित एवं पेट में दर्द होना	२-७ दि०	३००	१७२	२-७ दि०	९
	कब्ज एवं दस्त बारी -२ से	१७ दि०-६ मा०	१९६	९३	४-१६ दि०	७,९
	कब्ज मल सख्त होना	१० दि० -५ व०	२८१	१५२	५ दि०-८ स०	७
	बवासीर-बाह्य परन्तु शुष्क एवं बिना रक्तस्राव के	१५-दि०-२ व०	१३१	७८	६-३० दि०	९
	रक्त स्राव के साथ	६ मा०-५ व०	५७	३४		
श्वसन तंत्र	शुष्क खांसी	४-१० दि०	१[illegible]१	६१	३-९ दि०	९

औषधि का नाम : ईगल मार्मिलोस पोटैन्सी : ३ , ६, ३०

सिर	फटने जैसा दर्द उग्रता-सायंकाल,	२-२० दि०	४७३	३०५	३-१० दि०	८
	चक्कर आना	३-९ दि०	४२	३५	४-८ दि०	८
नेत्र	दाहिने नेत्र में सिलने जैसा दर्द तथा धूल पड़ने जैसा महसूस होना एवं जलन	३-७ दि०	११	११	२-५ दि०	८
नासिका	जुकाम के साथ, जलीय नासा-स्राव एवं छींके आना	३-१० दि०	२९२	१६९	३-७ दि०	८
अमाशय	अपचन एवं खट्टे डकार आना	७-३० दि०	११७	११७	३-२० दि०	८
	भूख न लगना	७-२० दि०	३४७	२०६	६-१५ दि०	८
उदर	पेट में दर्द होना-नाभि के पास,उग्रता-खाने के बाद (मरोड़ जैसा)	२-१५ दि०	५३०	३२२	७ दि०-१ मा०	९
	कब्ज-मल सख्त	२-५ व०	२७	२१	३-९ स०	८

	मल कब्ज युक्त - आवं के साथ, अर्धठोस	७ दि०-३ मा०	६८७	३९१	७-२० दि०	८
	तथा रक्त- मिश्रित	२ स०-२ व०	३८	२३	१-८ स०	७
	उदरवायु, उग्रता दोपहर में	१० दि०-२ व०	४८४	२६६	३-१६ दि०	८
	दस्त लगना	२-७ दि०	६४	५६	३-६ दि०	८
	बवासीर (बाह्य एवं दर्द के साथ)	१ मा०-१० वर्ष	७१	६९	२ स०-३ मा०	७
		१ दि०-४० वर्ष	२०	११	२-२७ दि०	
पुरुष जननांग	रात्रि में वीर्यस्राव होना	१५-३० दि०	३४	१६	७-३० दि०	८
पीठ	पीठ में दर्द होना	७-१५दि०	१३२	७२	२-१० दि०	८
टांगें एवं भुजाएं	पिंडलियों में दर्द होना	३ दि०-६ मा०	२२४	१३४	३-२० दि०	८
त्वचा	त्वचा में खुजली बिना उद्भेद के	७-२० दि०	२९	१८	६-१२ दि०	८
	पेपुलर उद्भेद के साथ खुजली	७-३० दि०	३६४	२००	४-१८दि०	८
ज्वर	ज्वर - उग्रता सायंकाल	१-७ दि०	१९८	११८	२-७ दि०	८
	ज्वर के साथ खांसी एवं जुकाम	२-८ दि०	१८	१३	२-८ दि०	

(शेष अगले अंक में जारी)